

जामिया ने "महात्मा गांधी का स्वराज" पर एक कार्यशाला आयोजित की; 1920 में जामिया मिल्लिया इस्लामिया की स्थापना में गांधी के योगदान को किया याद

दिनांक : 01 नवंबर 2025

जामिया मिल्लिया इस्लामिया (जेएमआई) के नेल्सन मंडेला शांति एवं संघर्ष समाधान केंद्र (एनएमसीपीसीआर) द्वारा आज जामिया के 105वें स्थापना दिवस समारोह के अंतर्गत "महात्मा गांधी का स्वराज" पर एक विचारोत्तेजक और ज्ञानवर्धक कार्यशाला का आयोजन किया गया। दूरदर्शन के महानिदेशक श्री के. सतीश नंबूदरीपाद, महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी के पूर्व कुलपति और चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ के डीन प्रोफेसर संजीव के. शर्मा और दिल्ली विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग के प्रोफेसर संजीव कुमार एच.एम. सहित एक प्रतिष्ठित पैनल ने विश्वविद्यालय के एफटीके सीआईटी सभागार में स्कॉलर्स, संकाय सदस्यों और अधिकारियों से भरे हॉल को संबोधित किया। इस अवसर पर जेएमआई के कुलपति प्रोफेसर मजहर आसिफ़, जेएमआई के रजिस्ट्रार प्रोफेसर मोहम्मद महताब आलम रिज़वी, छात्र कल्याण के डीन प्रोफेसर नीलोफर अफज़ल और एनएमसीपीसीआर के निदेशक प्रोफेसर अबुजर खैरी भी उपस्थित थे।

एनएमसीपीसीआर के निदेशक प्रो. अबुजर खैरी, एनएमसीपीसीआर के अन्य संकाय सदस्यों, प्रो. कौशिकी, प्रो. राजीव नयन और प्रो. असलम खान के साथ कार्यक्रम में शामिल हुए। कार्यशाला का संयोजन डॉ. बिनीश मरियम ने किया और सुधांशु त्रिवेदी इसके सह-संयोजक थे।

अपने प्रारंभिक भाषण में, प्रोफेसर महताब आलम रिज़वी ने कहा कि चूंकि जेएमआई 105 वर्ष का हो गया है, इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि हम न केवल इस राष्ट्र के लिए बल्कि इस विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए महात्मा गांधी के योगदान को याद करें, जिसके साथ उनका गहरा भावनात्मक जुड़ाव था, इस हद तक कि जामिया मिल्लिया इस्लामिया के विचार से प्रेरित होकर, हम पूरे विश्वास के साथ कह सकते हैं कि "जामिया मिल्लिया इस्लामिया गांधीवादी आदर्शों की जीवंत अभिव्यक्ति है।" नेल्सन मंडेला और महात्मा गांधी के बीच समानताएँ बताते हुए, प्रो. रिज़वी ने कहा कि "गांधी के 'स्वराज' का अर्थ राजनीतिक स्वतंत्रता से कहीं अधिक है; यह स्व-शासन और मन, शरीर और आत्मा की स्वतंत्रता का प्रतीक है।" उन्होंने कहा, महात्मा गांधी के लिए, "स्वतंत्रता कोई लाइसेंस नहीं है, बल्कि यह आत्म-नियंत्रण का अभ्यास है।" प्रमुख गांधीवादी विचारों पर विस्तार से बात करते हुए प्रोफेसर रिज़वी ने कहा, "गांधी का 'ग्राम स्वराज' लोकतंत्र की हमारी समझ का केंद्र है क्योंकि यह एक ऐसी व्यवस्था है जिसके तहत लोग राजनीति में वास्तविक निर्णयकर्ता बन जाते हैं और केवल ऐसी प्रणाली में ही वास्तविक लोकतंत्र पनप सकता है।"

प्रो. रिज़वी ने प्रमुख गांधीवादी दर्शन और उसकी समकालीन प्रासंगिकता पर विस्तार से बात की, जिसमें स्वराज, खादी, ग्रामीण विकास और पंचायती राज संस्थाएँ शामिल थीं, और बताया कि कैसे ये संस्थाएँ भारत सरकार की 'स्किल इंडिया' और 'मेक इन इंडिया' जैसी प्रमुख पहलों का दार्शनिक आधार बनती हैं। प्रोफेसर रिज़वी ने देश के शैक्षिक और सामाजिक परिदृश्य को आकार देने में

जेएमआई की महत्वपूर्ण भूमिका का उल्लेख किया, विशेष रूप से नई तालीम की अवधारणा के माध्यम से, और एक समावेशी और समग्र शैक्षिक प्रणाली के साथ प्रयोग करने में विश्वविद्यालय की भूमिका का उल्लेख करते हुए भारत के पूर्व राष्ट्रपति और जेएमआई के संस्थापक सदस्य और 1926-1948 तक कुलपति डॉ. जाकिर हुसैन को उद्धृत किया, जिन्होंने जेएमआई की तुलना "राष्ट्र के लिए एक प्रयोगशाला" से की।

प्रो. सजीव कुमार ने अपने संबोधन में, जो महात्मा गांधी के मूल दर्शन और समकालीन भारत के लिए इसकी प्रासंगिकता पर केंद्रित एक समृद्ध और जटिल नैतिक और सत्तामूलक सैद्धांतिक ढांचे पर आधारित था, कहा कि गांधी ने 'सनातनी परंपरा' और धर्म के बहुलवादी दृष्टिकोण का समर्थन किया। "गांधी धर्म के बजाय आस्था में विश्वास करते थे, जो उनके राम राज्य दृष्टिकोण का आधार था, जिसे धर्म के एक प्रकार्यवादी या साधनात्मक दृष्टिकोण के बीच के अंतर के रूप में समझा जाना चाहिए - 'आस्था' नामक एक मूल्यवादी धारणा से - जो अमूर्त, व्यक्तिपरक और पारलौकिक है।" इस तरह के चित्रण में, समाज की अनुभवजन्य धारणा या भौतिक और वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण गौण हो जाता है और गांधीवादी विचार कि 'सबसे कमजोर व्यक्ति में भी सच बोलने का साहस होता है' यह स्पष्ट हो जाता है। अपने आकर्षक और दार्शनिक रूप से समृद्ध व्याख्यान में, उन्होंने भगवद्गीता और हिंदू स्वराज, सत्य के विचारों, नैतिक जीवन और पीड़ा व आत्म-साक्षात्कार की जटिल और द्वंद्ववादी धारणा और ऑन्कोलॉजी पर गांधी के विचारों पर चर्चा की। उन्होंने सरकार की गांधीवादी समझ पर भी बात की, जो एक नैतिक रूप से निर्धारित, स्व-पाठ्य अभ्यास है जो आम सहमति की गैर-संस्थागत धारणा द्वारा काम करती है। उन्होंने यह बताते हुए अपने व्याख्यान का समापन किया कि गांधी के स्वराज में निर्भीक आलोचना की पूर्वकल्पना थी।

मुख्य अतिथि, श्री के. सतीश नंबूदरीपाद ने जामिया मिल्लिया इस्लामिया को उसके 105 वर्ष पूरे करने पर बधाई दी और इसे एक बड़ी उपलब्धि बताया, खासकर इसलिए क्योंकि इस संस्थान ने भारत के इतिहास, स्वतंत्रता संग्राम और विकास में एक महत्वपूर्ण और अमिट भूमिका निभाई है। यजुर्वेद और कालिदास का उल्लेख करते हुए, श्री नंबूदरीपाद ने प्रकृति के साथ और प्रकृति के एक अंग के रूप में रहने की अवधारणा पर जोर दिया और कहा कि दुर्भाग्य से, "दुनिया में रहने वाले 15 अरब जीवों में से, मनुष्य ही हैं जो अपने जीवन और भौतिक सुख-सुविधाओं के लिए दुनिया में सबसे अधिक विनाश का कारण बनते हैं...। कुछ वैज्ञानिकों को डर है कि इसी गति से मनुष्य भी डायनासोर की तरह विलुप्त हो सकते हैं।" ऐसी कल्पना में, गांधीवादी विचार और दर्शन और भी प्रासंगिक हो जाते हैं, खासकर उनकी सतत विकास की अवधारणा, क्योंकि उन्होंने विद्वानों से गांधी की अक्सर उद्धृत पंक्तियों, "सबकी ज़रूरतों के लिए पर्याप्त है, लेकिन किसी के लालच के लिए नहीं" इसके आलोक में, बिना सोचे-समझे उपभोग करने की प्रवृत्ति, विकास और भौतिकवाद की धारणा पर गंभीरता से विचार करने का आग्रह किया।

प्रोफेसर संजीव के. शर्मा ने एक रोचक व्याख्यान देते हुए दक्षिण अफ्रीका के डरबन में गांधीजी के बिताए वर्षों का समृद्ध इतिहास प्रस्तुत किया, जहाँ उन्होंने फीनिक्स आश्रम की स्थापना की थी। उन्होंने शिक्षा और संस्कृति पर उनके प्रमुख विचारों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि गांधीवादी दर्शन और आचरण भारतीय संस्कृति और विचारों में निहित हैं। उन्होंने कहा कि गांधीजी हमेशा यह मानते थे कि नया भारत "ब्रिटेन की प्रतिकृति नहीं होगा"। प्रोफेसर शर्मा ने बताया कि गांधीजी हमेशा आलोचना स्वीकार करते थे और अपने आलोचकों को अपने करीब रखते थे, जो उनकी विनम्रता और आत्म-आलोचना तथा आत्म-मूल्यांकन के प्रति खुलेपन को दर्शाता है। उन्होंने आगे कहा कि अभिव्यक्ति की

स्वतंत्रता और आलोचना की स्वतंत्रता केवल भारत के संविधान से ही नहीं मिलती, बल्कि भारतीय परंपरा और संस्कृति का एक अभिन्न और ऐतिहासिक हिस्सा है। गांधीजी के व्यक्तित्व में असाधारण चरित्र और आकर्षण का तर्क देते हुए उन्होंने कहा, "दक्षिण अफ्रीका में बिताए वर्षों से लेकर महात्मा बनने तक गांधीजी की यात्रा लंबी और कठिन परिश्रम तथा कठिनाइयों से भरी थी।" उन्होंने यह कहते हुए समापन किया कि "शिक्षा का उद्देश्य और लक्ष्य मनुष्य को महान बनाना होना चाहिए, न कि केवल डिग्री प्रदान करना। शिक्षा को अच्छे नागरिक और अच्छे इंसान बनाने चाहिए।" उन्होंने कहा कि जेएमआई एक ऐसा संस्थान है जिसके बारे में उनका मानना है कि वह ऐसा करेगा और इस तरह वह गांधीजी के शिक्षा के दृष्टिकोण और राष्ट्र के जीवन में उसकी भूमिका की विरासत को आगे बढ़ाएगा।

कुलपति प्रो. आसिफ ने कहा कि गांधीजी के साथ उनका संबंध सिर्फ शैक्षणिक ही नहीं, बल्कि अनुभवजन्य भी है, क्योंकि वे उस स्थान से आते हैं जहां महात्मा गांधी ने अपना सत्याग्रह शुरू किया था और अब वे जेएमआई नामक विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में कार्यरत हैं, जिसकी स्थापना में महात्मा गांधी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। प्रो. आसिफ ने कहा कि जामिया को गांधी जी के दो प्रमुख योगदान थे: पहला, नई तालीम का विचार और शिक्षा के साथ प्रयोग; दूसरा, महात्मा गांधी ने उस समय जामिया को आर्थिक रूप से मदद की जब वह गहरे आर्थिक संकट में था और कहा था कि अगर संस्थान को अपनी वित्तीय स्थिति की चिंता है, तो वह खुद भीख का कटोरा लेकर आगे बढ़ेंगे, इस बात पर ज़ोर देते हुए कि विश्वविद्यालय को "चलना ही होगा"। उन्होंने छात्रों को गांधी के आदर्शों, खासकर सत्याग्रह के सिद्धांतों का पालन करने और अपने जीवन में सत्य को अपनाने की याद दिलाई।

कार्यक्रम का संचालन एनएमसीपीसीआर की एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. बिनीश मरियम ने किया और राष्ट्रगान के साथ समापन हुआ।

प्रो. साइमा सईद
मुख्य जनसंपर्क अधिकारी